31.07.2020

B.A. Part-I
Economics, Paper-II
"National Income"-I
Macro Economics

DR. Bipin Kumar
Professor, Deptt. of Economics
R.R.S. College, Mokama (Patna)
PPU, Patna.

प्रश्न: राष्ट्रीय आय क्या है? इसकी प्रमुख अवधारणाएँ एवं मापने की विधियों का वर्णन करें।
(What is National Income? Discuss its concepts and method of measurements.)

उत्तर: किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास की जानकारी का प्रमुख साधन राष्ट्रीय आय है। आजादी के बाद भारत सरकार के द्वारा राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाने हेतु 4 अगस्त 1949 को एक 'राष्ट्रीय आय समिति' का गठन किया। इस समिति के अध्यक्ष विश्व प्रसिद्ध सांख्यिकीविद् अर्थशास्त्री 'पी० सी० महालनोबिस' को बनाया गया।

वैसे हमारे देश भारत में राष्ट्रीय आय का अनुमान सर्वप्रथम वर्ष 1868 में 'दादा भाई नौरोजी' ने लगाया था। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "Poverty and un British Rule in India" में राष्ट्रीय आय की गणना की थी।

वैसे, भारतवर्ष में राष्ट्रीय आय की वैज्ञानिक गणना का श्रेय प्रो० वी० के० आर० वी० राव को दिया जाता है। इन्होंने राष्ट्रीय आय के अनुमान के लिए उत्पादन गणना प्रणाली तथा आय गणना प्रणाली के सम्मिश्रण का प्रयोग किया — जिसका अनुमान सर्वाधिक विश्वसनीय माना जाता है। इन्होंने राष्ट्रीय आय का आकलन अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "National Income in British India" में प्रस्तुत किया। वैसे हमारे देश में राष्ट्रीय आय को मापने के लिए वित्त वर्ष 1 अप्रैल से 31 मार्च तक माना जाता है।

वर्तमान में "किसी एक निश्चित वर्ष में उत्पादित अंतिम वस्तुएँ एवं सेवाओं के कुल मौद्रिक मूल्य से राष्ट्रीय आय कहलाते हैं, "राष्ट्रीय आय में वस्तुओं एवं सेवाओं की बाजार कीमतें शामिल होती हैं।" राष्ट्रीय आय के आँकड़ों से कुल उत्पादन संबंधित, राष्ट्रीय आय का ढाँचा, प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय, बचत एवं निवेश इत्यादि से संबंधित जानकारी मिलती है।

वर्तमान समय में, भारतवर्ष में राष्ट्रीय आय का अनुमान "केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन" (C.S.O.) के द्वारा की जाती है। इस संगठन की स्थापना 2 मई 1951 ई० को की गयी थी — इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है। केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन (C.S.O.) के द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी कहा जाता है — जिसे 'श्वेत पत्र' भी कहा जाता है।

यह संगठन (C.S.O.) ने राष्ट्रीय आय की गणना में सुविधा एवं सरलता लाने एवं स्पष्टता हेतु भारतीय अर्थव्यवस्था का वर्गीकरण प्रमुख रूप से तीन क्षेत्रों में किया है, यथा, प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र एवं तृतीयक क्षेत्र तथा 14 उपक्षेत्रों में विभक्त किया गया है। इन क्षेत्रों की व्याख्या निम्नलिखित रूप से किया जा सकता है:

(i) प्राथमिक क्षेत्र (Primary Sector): इस क्षेत्र के अन्तर्गत मुख्य रूप से कृषि, वानिकी, पशुपालन, मछली एवं सहायक कृषि क्षेत्र एवं खान-खदान से संबंधित उत्पादन किया जाता है।

(ii) द्वितीयक क्षेत्र (Secondary Sector): विनिर्माण, निर्माण, बिजली, गैस और जल आपूर्ति।

(iii) तृतीयक क्षेत्र (Tertiary Sector): इसमें परिवहन, संचार, बीमा, बैंकिंग, व्यापार आदि सेवाएं आती हैं।

सामान्यतया, राष्ट्रीय आय को तीन प्रमुख विधियों से मापा जाता है:
1. उत्पादन गणना विधि (Production method)
2. आय गणना विधि एवं (Income method) and
3. उपभोग व्यय विधि (Expenditure or outlay method):
4. सामाजिक लेखांकन प्रणाली (Social Accounting method)

(1) उत्पादन गणना विधि: इस विधि के अन्तर्गत मुख्य रूप से एक वर्ष में उत्पादित अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं का मूल्य ज्ञात किया जाता है।

(2) आय गणना विधि: इस विधि के तहत अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त आय का योग किया जाता है।

(3) उपभोग बचत या व्यय विधि: इसमें राष्ट्रीय आय की गणना करने के लिए कुल उपभोग एवं कुल बचत का अनुमान लगाया जाता है -- इन दोनों का कुल योग ही 'राष्ट्रीय आय' कहलाता है।

हमारे देश में (C.S.O.) केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन राष्ट्रीय आय का अनुमान करने के लिए उत्पादन विधि और आय विधि का प्रयोग करता है।

(4) सामाजिक लेखांकन प्रणाली (Social Accounting method): इस विधि के अनुसार संपूर्ण समाज में लेन-देन करने वालों को विभिन्न वर्गों में बांटा जाता है। आर्थिक जगत की इकाइयों ... कृषि उत्पादक, व्यापारी, अंतिम उपभोक्ता ... के रूप में होते हैं ... [illegible] आय गणना की ... [illegible]

राष्ट्रीय आय की प्रमुख अवधारणाओं (Concept of National Income) एवं प्रति व्यक्ति आय की व्याख्या करें:

सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product (G.D.P.)): किसी भी देश में एक वर्ष में उत्पादित सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के मौद्रिक मूल्य को सकल घरेलू उत्पाद या उत्पादन (G.D.P.) के नाम से जाना जाता है।

(2) शुद्ध घरेलू उत्पाद (N.D.P.) = सकल घरेलू उत्पाद (G.D.P.) - मूल्य ह्रास।

(2) सकल राष्ट्रीय उत्पाद (National Domestic Product (N.D.P.)): किसी भी देश के द्वारा एक वर्ष में उत्पादित (सभी) समस्त वस्तुओं और सेवाओं के मौद्रिक मूल्य को सकल राष्ट्रीय उत्पाद (N.D.P.) कहा जाता है। इसके अंतर्गत विदेशों से प्राप्त आय को भी सम्मिलित किया जाता है।

सकल राष्ट्रीय उत्पाद (G.N.P.) = सकल घरेलू उत्पाद (G.D.P.) + विदेशों से अर्जित विशुद्ध आय.

शुद्ध राष्ट्रीय आय (Net National Product (N.N.P.)): जब सकल राष्ट्रीय उत्पाद से उत्पादन में प्रयुक्त मशीनों एवं पूँजी की घिसावट को घटा दिया जाता है तो शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (N.N.P.) प्राप्त होता है, अर्थात

शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (N.N.P.) = सकल राष्ट्रीय उत्पाद (G.N.P.) - मूल्यह्रास

राष्ट्रीय आय (National Income) (N.I.): साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद को राष्ट्रीय आय कहा जाता है -- प्रचलित कीमतों पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद में से अप्रत्यक्ष कर को घटा दिया जाय और उत्पादन को जोड़ दिया जाये तो राष्ट्रीय आय प्राप्त होती है।

'राष्ट्रीय आय' (N.I.) = प्रचलित कीमतों पर शुद्ध राष्ट्रीय आय - अप्रत्यक्ष कर + उत्पादन.

वास्तविक राष्ट्रीय आय (R.N.I.): किसी भी देश की मुद्रा की क्रयशक्ति में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है, इसलिए वास्तविक राष्ट्रीय आय की जानकारी के लिए किसी आधार वर्ष के सापेक्ष 'शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद' की गणना की जाती है।

प्रति व्यक्ति आय (Per capita Income): जब कुल राष्ट्रीय आय में से कुल जनसंख्या का भाग देते हैं तो प्रति व्यक्ति आय प्राप्त होती है। प्रति व्यक्ति आय की प्राप्ति दो तरह से की जाती है:

(1) प्रचलित कीमतों पर प्रतिव्यक्ति आय: प्रचलित कीमतों पर राष्ट्रीय आय / वर्तमान जनसंख्या

(2) ~~स्थिर~~ स्थिर कीमतों पर प्रतिव्यक्ति आय: स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय / वर्तमान जनसंख्या

(3) वैयक्तिक आय: एक वर्ष में राष्ट्र के निवासियों को प्राप्त होने वाली वास्तविक आयें वैयक्तिक आय कहलाती है।

वैयक्तिक आय = राष्ट्रीय आय + अंतरण भुगतान - निगम कर - अवतरित लाभ - सामाजिक सुरक्षा अनुदान.

व्यय योग्य आय: इसमें प्रत्येक व्यक्ति एक वर्ष में प्राप्त आय को पूर्णतः व्यय नहीं कर पाता बल्कि सरकार के द्वारा प्रत्यक्ष कर के रूप में कुछ राशि ले ली जाती है -- और शेष बची हुई राशि को व्यय योग्य राशि कहते हैं।

व्यय योग्य आय = वैयक्तिक आय - प्रत्यक्ष कर.

उपरोक्त विश्लेषण से राष्ट्रीय आय, उसकी अवधारणायें एवं मापने की विधि का वर्णन सुस्पष्ट हो जाता है।